॥ 卐 जय दादी की 卐 ॥

श्री हरबी सती लघु मंगल पाठ

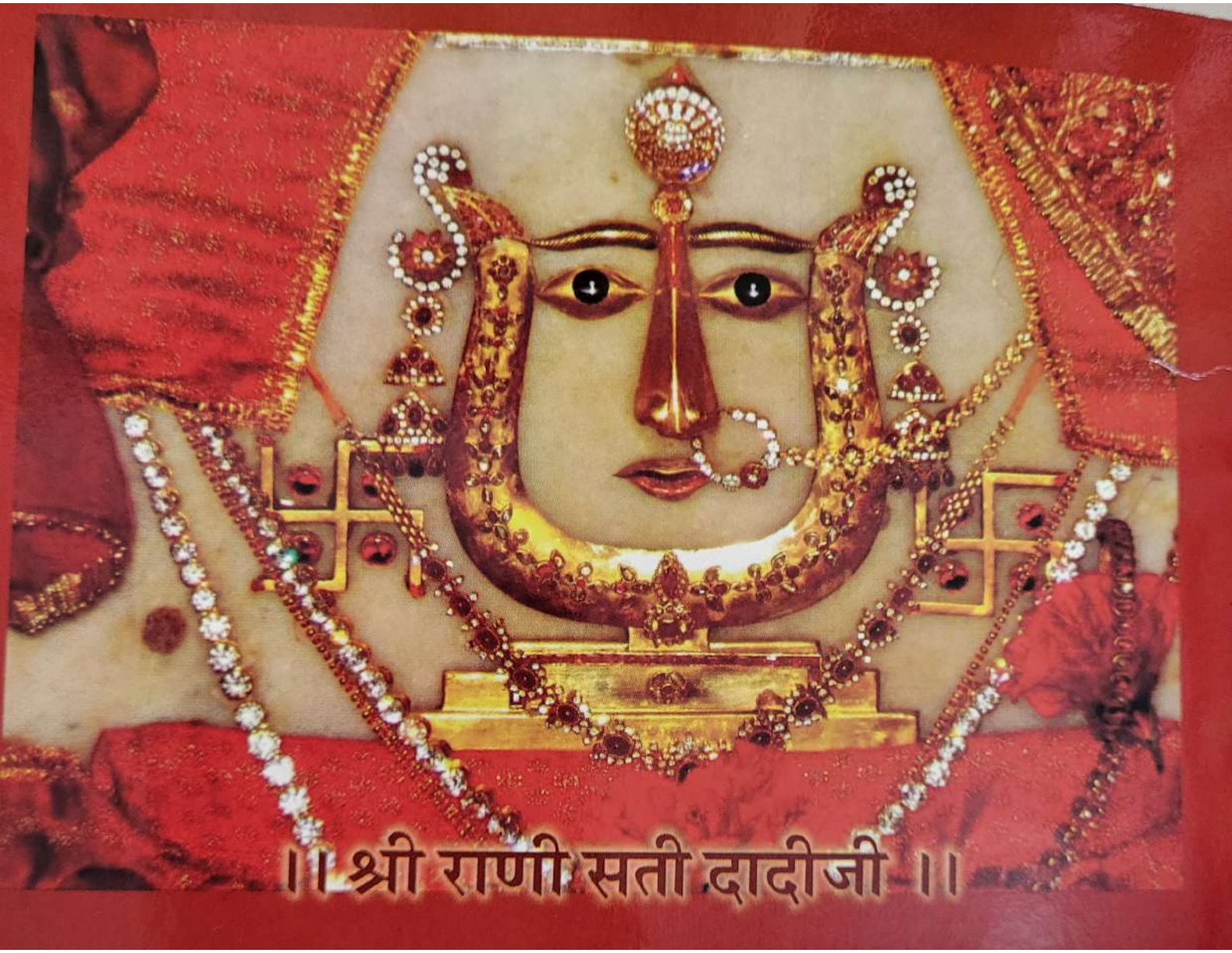
।। श्री राणी सती दादीजी ।।

!! श्री हरबी सत्यै नमः !!

श्री हरबी सती लघु मंगल पाठ

卐 नित्य मंगल पाठ 卐

-: रचयिता :-

तेजेन्द्र सिंह चौहान (तेजू भय्या)

अजमेर - मोबाईल : 98281 80203

-: प्रकाशक :-

दादी परिवार, भीलवाड़ा

मूल्य

नित्य मंगल पाठ

मंगलाचरण

गजाननं भूतगणादि सेवितम्।
कपित्थ जम्बूफल चारू भक्षणम्।
उमासुतं शोक विनाशकारकम्।
नमामि विध्नेश्वर पादपंकजम्।

गुरू वंदना

गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णू गुरूर्देवो महेश्वरः।
गुरूः साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गूरूवे नमः।।

सरस्वती वंदना

सरस्वती महाभागे! विद्ये! कमल लोचने।
विश्वरूपे! विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तुते।।

ब्रह्मा वंदना

नमस्तेसते जगत्कारणाय, नमस्ते चिते सर्वलोकाश्रवाय।
नमोऽद्वैतवाय मुक्तिप्रदाय, नमो बह्मणेव्यापिते शाश्वताय।।

विष्णु वंदना

शान्ताकारं भुजगशयनं, पद्मनाभं सुरेशं।
विश्वधारं गगनसदृशं, मेघवर्णं शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं, योगिभिर्ध्यानेगम्ये।
वन्दे विष्णु भवभयहरे, सर्वलोकैकनाथम्।।

शिव वंदना

कपूर्रगौरं करूणावतारे, संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयाऽरविन्दे, भवं भवानी सहितं नमामि।।

रामचन्द्र वंदना

मनोजवम् मारूत तुल्य वेंगम्
जितेन्द्रीयम् बुद्धिमताम् वरिष्ठम्।
वातात्मजंम् वानरयुथ मुख्यम्
श्री रामदूतं शरणंम् प्रपद्धयै।।

दुर्गा स्तुति

सर्वमंगल मांगल्यै शिवेसर्वार्थ साधिके।
शरणैय त्रयम्बिके गौरी, नारायणी नमोऽस्तुते।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्व स्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते।।

पितर देव की स्तुति

जय जय पितरजी महाराज, मैं शरण पडयो हूँ थारी ।। टेर ।।

आप ही रक्षक, आप ही दाता, आप ही खेवनहारे।
मैं मुरख हूँ कछु नहिं जानूँ, आप ही हो रखवारे ।।1 ।। जय.

आप खड़े है हरदम हर घड़ी, करने मेरी रखवारी ।
हम सब जन है शरण आपकी, है ये अरज गुजारी ।।2 ।। जय.

देश और परदेश सब जगह, आप ही करो सहाई ।
काम पड़े पर नाम आपको, लगे बहुत सुखदाई ।।3 ।। जय.

मैं हूँ शरण आपकी, अपने सहित परिवार ।
रक्षा करो आप ही सबकी, रटूँ मैं बारम्बार ।।4 ।। जय.

"श्री दादी दैव्यै नमः"

श्री हरबी सती लघु मंगल पाठ

श्री गणेश सद्गुण सदन, सिद्धि बुद्धि दातार
सरस्वती वरदायनी, करहु सुमति साकार
मात पिता गुरू गण सभी, सर्व देव आधार
प्रणनबहु श्री हरबी सती, कृपा करो दातार
सिंहल कुल भव तारिणी, शक्ति की अवतार
करूणा कर करूणामई, सुमिरू बारम्बार

चौपाई

श्री हरबी डाली महामाया, नाम जपे जो जन सुखपाया
शक्ति की अवतार भवानी, सुनहु विनय माता वरदानी
दिशनाऊ शुभ धाम निराला, मंदिर मण्डल भव्य विशाला
कलियुग में सत की अवतारी, हरबी डाली दादी म्हारी
गाडौदा कुल जन्म सुहाए, मात पिता का मन हर्षाए
हरबी नारायणी अवतारी, बालपने में लीला भारी
शुभ संवत् 1460, आई सकल करने को ठाठ

दोहा

बालरूप को देख कर होता हर्ष अपार
बलिहारी जाएँ सभी करते जय जयकार

शुक्ल पक्ष के चन्द्र सम, तेज सवाया होए
बालकपन खेले कूदे, ज्ञान ध्यान संजोए

चौपाई

दिन-दिन बाई बढ़ती जाए, सत का तेज सभी मन भाए
मुखमण्डल फूलों सा प्यारा, सूर्य देव सा था उजियारा
ना ना विधी लीला दिखलाए, दिन-दिन पल-पल बढ़ती जाए
जब आयु कुछ लगी सयानी, महतारी मन चिंता आनी
करो विवाह सुनहु मम बाता, हरबी का अब जोड़ो नाता
कहे मात यह पिता से बात, करो बाई के पीले हाथ
सिंहल कुल शुभ चयन निराला, नगर सेठ जालुका नामा
कुँवर बना तिनके अती प्यारे, कामदेव सी आभा वाले

दोहा

सुखी हुए परिवार दो, चली बात पर बात
धन्य हुए कुल दोनों ही, दोनों ही घर ठाठ
तिथी लगन, दिन वार का, मुहुर्त लियो निकाल
अब देरी मत लाईए, काज करो तत्काल

चौपाई

दोनों ही घर खुशियाँ छाई, बाजेगी अब शुभ शहनाई
वधु पक्ष शुभ शगुन मनाए, और वर पक्ष भी नाचे गाए
तेल हलद शुभ रीत सुहानी, दोनों घर मंगल मय जानी
रीत सभी सारी मनाई, दोनों घर परिवार सुहाई
मेहंदी की महक सुहाए, दुल्हन बन हरबी मुस्काए
कुँवर वन्ना बनड़ा बन आए, गाडौदा में खुशियाँ छाए

दोहा

धूम धाम से हो गया, पूरण सफल विवाह
धन्य हुए जन मन सभी, सफल हुई सब चाह
मात पिता घर छोड़ के गई, तज सखियन को चाव
सासरिये आई हरबी, ले पति पद सम्भाव

चौपाई

एही प्रकार दिन बिते सुहाई, एक दिवस शुभपाती आई
मामा की बेटी इक प्यारी, हरबी की बहना वो न्यारी
शुभविवाह उसका है भाई, जिसमें जावे हरबी बाई
ले आज्ञा ननिहाल सिधारी, हरबी बाई सा सुखकारी
धूमधाम सब काम हुआ है, हरबी का भी नाम हुआ है

इधर कुँवर लेवन जब जाए, संग में एक विप्र सुत जाए
चले जभी शुभ शगुन मनाया, बिच मार्ग एक बिहड़ आया
विप्र हिए में पाप जगा था, स्वर्ण-वस्त्र का लोभ जगा था
करने लगा लड़ाई पापी, कुँवर बन्ना के संग वो घाती
कूट निती से वार कराई, ले कटार हिए मांही घुसाई
देवलोक जब कुँवर सिधारे, तब पापी यह बात विचारे
अब हरबी को भी ले आऊँ, दोनों का ही धन में पाऊं

दोहा

यह विचार कर कुवंर देह, दी भूमी में दबाए
चला नवलगढ़ को पापी, लालच बुद्धि खाय
उधर जग गया सत भारी, हरबी के तन माय
महाकाल के सामने, खुद पापी चल आय

चौपाई

सारी घटना खुद बतलाए, नगर ग्राम सब दौड़ा आए
विप्र पुत्र का सत्य बताया, दिशनाऊ आई महामाया
कुंवर देह दी जभी दिखाई विप्र पुत्र की मती घबराई
डर कर गिरा कूप में जाय, पाप कर्म की शिक्षा पाई
तब बोली श्री हरबी बाई, दो अब मोरी चिता सजाई
संग पति मैं सती हो जाऊँ, सती लोक पति के संग जाऊँ
चढ़ी चिता बन दुल्हन बाई, श्री हरबी दादी सुखदाई
जिस स्थान हुई सती भारी, वह दिशनाऊ धाम सुखारी
सारी दुनिया बढ़-चढ़ आए, आ मंदिर में दर्शन पाए
सत की ज्योत जलाने आई, कलियुग में श्री हरबी मांई
खैर वृक्ष की छांव सुहाई, मनवांछित वर दुनिया पाई
बाजे घंट घड़ावल भारी, सिंहल गौत्र भयो सुखकारी

सबकी ही करती सुनवाई, श्री हरबी डाली महामाई
दादी नाम परम सुखदाई, जपो निरंतर सब मन लाई
'तेजू' यह सब छंद बनाई, चरण शरण की किरपा पाई

दोहा

लघु मंगल का रूप है, मूल कथा अनुसार
पढ़े सुने विश्वास कर, पाए पुण्य अपार
श्री हरबी ड़ाली सती, शक्ति की अवतार
अब शरणागत् राखिए, कर मेरो उद्धार
सुदी कार्तिक चौदस हुई, सती परम सत धार
कलियुग में लीला करी, दादी जी दातार
चिंता नही चिंतन करो, रखो पूर्ण विश्वास
दादी जी पूरण करे, 'तेजू' सब विधी आस

" श्री हरबी डाली सती दादीजी की आरती "

जय हरबी डाली सती माता, मैया जय हरबी डाली सती माता।
जो जन तुमको ध्यावे, सुख सम्पति पाता ।। जय.....

मकराणे का मन्दिर तेरा, मन को अति भाता।
एक झलक जो पावे, संकट कट जाता ।। जय.....

मेहन्दी रोली चुड़ा चुनड़ी, भेंट करें तेरे।
तन मन ध्यान अर्पण कर, द्वार खड़े तेरे ।। जय.....

दिसनाऊ धाम तुम्हारा, सब जग विख्याता।
महिमा अमर तुम्हारी, भक्त जन सुखदाता ।। जय....

दूर - दूर से यात्री आकर, मन में हर्षाता।
उर आनन्द अति उपजे, दुखड़ा मिट जाता। जय....

जो जन सांझ सवेरे, तुम को ही ध्याता।
मन वांछित फल पाकर, भव से तर जाता। जय....

दुःखी दरिद्री रोगी, संकट मुक्त किए।
बहु धन-धान्य भरे घर, सुख सौभाग्य दिए ।। जय....

'नित्य आनन्द' थारी, आरती मैं गाता।
कृपा करो जा-जन पर, हे भाग्य विधाता ।। जय.....

हरबी डाली सतीजी की आरती, जो कोई नर गावे।
सुख आनन्द अति उपजे, भव पार उतर जावे ।। जय.....

- आरती श्री राणी सती दादी जी की -

ओम जय श्री राणी सती मैया, जय जगदम्बे सती।
अपने भक्त जनन की दूर करो विपती ।।1 ।। जय....

अवनि अनन्तर ज्योती अखंडित, मंडित चहुँ कुकुम्भा।
दुर्जन दलन खड़ग की, विद्युत सम प्रतिभा ।।2 ।। जय....

मरकत मणि मन्दिर अति मंजुल, शोभा लखि न परे।
ललित ध्वजा चहुँ ओरे, कंचन कलश धरे ।।3 ।। जय....

घण्टा घनन घडावल बाजत, शंख मृदंग धुरे।
किन्नर गायन करते, वेद ध्वनि उचरे ।।4 ।। जय....

सप्त मातृका करें आरती, सुरगण ध्यान धरें।
विविध प्रकार के व्यंजन, श्री फल भेंट धरे ।।5 ।। जय....

संकट विकट विदारिणी, नाशनि हो कुमति।
सेवक जन हृदय पटले, मृदुल करण सुमति ।।6 ।। जय....

अमल कमल दल लोचनी, मोचनी त्रय तापा।
दास आयो शरण आपकी, लाज रखो माता ।।7 ।। जय....

श्री राणीसती मैयाजी की आरती, जो कोइ नर गावे।
सदन सिद्धि नवनिधि, मनवांछित फल पावे ।।8 ।। जय....

।। पुष्पांजली ।।

चन्द तपे सूरज तपे, उद्गन तपे आकाश,
इन सबसे बढ़कर तपे, सतियों का सुप्रकाश।
सेवा पूजा बंदगी, सभी तुम्हारे हाथ,
मैं तो कुछ जानू नहीं, तुम जानो मेरी मात।
जय जय श्री हरबी सती, सत्य पूंज आधार,
चरण कमल धरि ध्यान में प्रण बहूँ बारंम्बार।
मेरा अपना कुछ नहीं जो कुछ है सो तोय,
तेरा तुझको सौंप दूँ, क्या लागत है मोय।
मैया सब कुछ मांग लो, जो कुछ मेरे पास,
दोउ नैना मत मांगियों, दादी थार दरश की आश।
जगदम्बा जग तारिणी, हरबी सतीजी मेरी मात,

भूल चूक सब माफ करो, रखियो सिर पर हाथ।
बैल चढ़े शंकर मिले, गरूढ़ चढ़े भगवान,
सिंह चढ़ी दादी मिली, हो सबका कल्याण।

जय माँ दिशनाऊ धाम की

विध्न हरण मंगल करण, गौरी सुत गणराज।
कण्ठ बिराजो शारदा, आन बचाओ लाज।।
मात पिता गुरूदेव के, धरूं चरण में ध्यान।
कुल देवी मां हरबी डाली, लाखों लाख प्रणाम।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव। त्वमेव सर्व मम देव देव।।

श्री हनुमानजी की आरती

आरती कीजै हनुमान लला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कला की।।
जाके बल से गिरिवर काँपै। रोग-दोष जाके निकट न झाँके।।
अंजनी पुत्र महा बलदायी। संतन के प्रभु सदा सहाई।।
दे बीरा रघुनाथ पठाये। लंका जारि सिया सुधि लाये।।
लंका सौ कोटि समुद्र सी खाई। जात पवनसुत बार न लाई।।
लंका जारि असुर संहारे। सियाराम जी के काज सँवारे।।
लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे। आनि सजीवन प्राण उबारे।।
पैठि पाताल तोरि जम-कारे। अहिरावन की भुजा उखारे।।
बायें भुजा असुर दल मारे। दाहिने भुजा संत जन तारे।।
सुर नर मुनि जन आरती उतारे। जै जै जै हनुमान उचारे।।
कंचन थार कपूर लौ छाई। आरति करत अंजना माई।।
जो हनुमान (जी) की आरती गावै। बसि बैकुंठ परमपद पावै।।